CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF=5.689

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 20th June 2020, Revised on 27th June 2020, Accepted 30th June 2020

शोध–पत्र

धन्ना भक्त : एक अनुशीलन

* डॉ. रामकुमार सिंह
सहआचार्य, राजकीय कला महाविद्यालय
सीकर,, राजस्थान, भारत
Email-ramkumarsingh358@gmail.com, Mob-9460166640

मुख्य शब्द : *सन्त सम्प्रदाय, धन्ना की आरती, भक्तमाल, प्रियादास की भक्तमाल की टीका आदि.*

सन्त सम्प्रदाय के अविर्भाव से पूर्व राजस्थान में भी भारत के अन्य क्षेत्रों क भाँति नाथ अथवा सिद्ध सम्प्रदाय का ही प्राधान्य रहा। यह अपने काल का मुख्य सम्प्रदाय था। नाथों तथा सिद्धों की हठयोग क्रियाओं का अपना विशेष महत्व था। यह साधना किसी भी प्रकार से लोकजीवन की आध्यात्मिक निष्ठा तथा भक्ति भावना को उत्प्रेरित करने में समर्थ न हो सकी। किन्तु समय की गति के साथ कालान्तर में जो सन्त सम्प्रदाय हमारे समक्ष आया वह इसी का विकसित रूप था।

उत्तरी भारत में भक्ति का प्रचार करने वाले रामानंद का प्रभाव राजस्थान में सर्वाधिक रहा। रामानंद के प्रसिद्ध 12 शिष्यों में से कबीर (जुलाहा), रैदास (चमार), धन्ना (जाट), पीपा (क्षत्रिय), सेन (नाई), सूदन (कसाई), अतंतानंद, सुरसरानंद, नरहर्यानंद, सुखानंद, योगानंद, भवानंद प्रमुख थे। एक 'पदमावती' नाम की शिष्या भी थी। इनमें से कबीर सार्वकालिक संत के रूप में उभर कर सामने आये और भक्ति का प्रचार किया।

कबीर के अतिरिक्त रामानंद की परम्परा में धन्ना, रैदास, पीपा आदि संतों ने भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मध्यकाल में राजस्थान में धार्मिक जीत को नई गति देने में पहला योगदान धन्ना भक्त ने दिया। धन्ना भक्त का जन्म अज्ञात हैं अनुमानतः विक्रम संवत 1472 (1415 ई.) में उनका जन्म राजस्थान के टोंक जिले के धुवन गांव में हुआ था। धन्ना, जाट कुल में उत्पन्न हुए और इनका व्यवसाय खेती था। धन्ना द्वारा रचित पद 'धन्ना की आरती' से इस बात का पता चलता है कि धन्ना विवाहित किसान थे। उस आरती में यह उल्लेख है कि ''हे भगवान! मैं तुम्हारी आरती करता हूँ। तू अपने भक्तों के मनोरथ पूर्ण किया करता है, अतएव मैं भी तुमसे अपने लिए कुछ मांगता हूँ। मैं चाहता हूँ कि तू मुझे आटा, दाल और घी दे जिसे खाकर मेरा चित्त सदा प्रसन्न रहे। मेरी यह भी ईच्छा है कि तेरी कृपा से मुझे पहनने के लिए जूता और कपड़ा भी मिल जाये। मेरे खेत में अच्छा अन्न पैदा हुआ करे और मेरे घर अच्छी दुधारू गाय, भैंस तथा एक तेज चलने वाली घोड़ी भी रहा करे। मैं इन सबके साथ अपने घर में रहने वाली सुन्दर स्त्री भी चाहता हूँ।''

नाभाजी की 'भक्तमाल, प्रियादास की 'भक्तमाल की टीका' और अनन्तदास की 'धन्ना की परची' में धन्ना के जीवन की अनेक अलौकिक घटनाओं का वर्णन मिलता है। यथा – खेत में बिना बोये ही बीज उगना और फसल अच्छी हो, बचपन में भगवान की

मूर्ति को भोग लगाना और भगवान का अवतरित होना, अपनी माता की अनुपस्थिति में सारा दूध साधुओं को पिला देना और फिर दूध के सारे पात्र भरे मिलना, घर की सारी रोटियां साधुओं को खिला देना और पुनः सारी रोटियां ज्यों की त्यों मिलना आदि घटनाओं का वर्णन किया गया है। इन वर्णित घटनाओं में कितना सत्य का अंश है, परन्तु इनके अध्ययन से इन नतीजे पर पहुंचा जा सकता है कि धन्ना का भगवान में पूर्ण विश्वास था तथा संग्रह वृत्ति से मुक्त संतो–साधुओं का सत्कार करने की भावना उनमें थी।

धन्ना की शिक्षाएं

लगभग सभी मध्यकालीन संत–भक्त अशिक्षित थे। इन्होंने जो भी ज्ञान प्राप्त किया वो या तो गुरू से या साधु–संतो के साथ सत्संग व लोक व्यवहार से प्राप्त किया। धन्ना भी अशिक्षित थे। अन्य संतों की भांति धन्ना ने भी अपने पदों को लिपिबद्ध नहीं किया, अपितु इनके शिष्यों, प्रशिष्यों ने इनके पदों को लिपिबद्ध किया होगा। संख्या की दृष्टि से धन्ना के पदों की संख्या बहुत कम है। धन्ना के जीवन व उनके उपदेशों के सम्बन्ध में हमें जो कुछ हस्तलिखित एवं प्रकाशित साहित्य मिलता है, उनमें नाभादास की 'भक्तमाल–, प्रियादास की 'भक्तमाल की टीका', अनन्तदास कृत धन्ना की परची, 'पीपा की परची' 'रैदास की परची' से उनकी शिक्षाओं और विचारधारा को समझा जा सकता हैं धन्ना ने अपने एक पद द्वारा रैदास को नामदेव, कबीर, व सेन नाई के समान मायामुक्त होकर हरिदर्शन प्राप्त करने वाला सिंह पुरूष बतलाया है और कहा है कि उक्त संतों की कथाएं सुनकर ही मुझ जाट के हृदय में भक्ति भाव जागृत हुआ है।

''रविदास दुवता ढ़ोरनी, तितिन्ह तिआगी माइआ।

परगुटु होआ साथ संगि, हरि दरसनु पाइआ।।

इहि विधि सुनि के जाट रो, उठि भगति लागा

ईश्वर में विश्वास

धन्ना को ईश्वर में दृढ़ विश्वास था। उनका कहना था कि जो भगवान करता है, वहीं होता है और इसमें किसी का भी वश नहीं चलता। वह मालिक ऐसा है जो माता के गर्भ में पानी (वीर्य–रज) से मानव शरीर की रचना करता है, जैसे की कुम्भ का पौधा जल में बिना किसी आधार के फैलता है तथा छिद्रहीन पत्थर के भीतर भी उसका कीड़ा भली–भांति सुरक्षित तथा जीवित रहता है। अतः भगवान की महिमा सोचने समझने की बात है।

''कर्मी अण्ड धरे जल अंतरि, तीर पंक तंह नांही।

पूरन परमानन्द पायोघर, चित चिंतित तिहि ठाई।।

पाहन कीट गोपि सबहिन थैं, मारग कतहूँ नाहि।

कहे धनौं ताका हरि पूरि, तं काई जीव डराहीं।।

(मध्यकालीन राजस्थान में धार्मिक आन्दोलन– डॉ. पेमाराम, पृ.283)

धन्ना ईश्वर की कबीर की भांति विगत, अगम, सर्वकर्ता, सर्वशक्तिमान तथा सर्वव्यापक व अवर्णनीय मानता है–

अगिणत महिमा राम तुम्हारी, मैं गुण का जाणों गोपाल।

अविगत अगम विषम गठिनाई, कहिं कहि कहूँ कहिये न जाई।

कहे धनौं स्वारथ परमारथ, जिनि पायो तिनि सहज सुभाई।।

(मध्यकालीन राजस्थान में धार्मिक आन्दोलन– डॉ. पेमाराम, पृ. 283)

कबीरदास जी की भांति धन्ना की भी यह धारणा कि ईश्वरानुभूति, आन्तरिक खोज और ध्यान द्वारा ही की जा सकती है। धन्ना के राम और गोपाल भी निर्गुण ही है।

नाम स्मरण – मध्यकालीन संतों की भांति धन्ना ने भी लोभ तथा काम को ईश्वर प्राप्ति में बाधक माना है तथा नाम–स्मरण को ईश्वर प्राप्ति का साधन बतलाया है। इनका कहना है कि भगवान के स्मरण के बिना व्यक्ति आवागमन में बंधनों से मुक्त नहीं हो सकता और उसे यमराज के यहां व्यर्थ की ठोकरें खानी पड़ती है। इसलिए वे नाम–स्मरण पर जोर देते हुए कहते है कि जो राम–नाम का जाप करते है वे ही मोक्ष को प्राप्त करते है –

रे चित! च्यंतसि दीनदयालहि, हरि बिन औन न कोई।

जे हि धने ब्रह्माण्ड खण्डलो, करता करे सो होईं।।

जिनिहि जननी के उदर उदक थे, पिण्ड कियो दस द्वारा।

गुरू–महिमा

कबीर आदि सभी संत गुरू भक्ति में निष्ठा रखते थे। गुरू के बताये मार्ग से ही ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है। अतः सभी संतो ंने गुरू–महिमा का वर्णन किया है। धन्ना भक्त भी गुरू–भक्ति में निष्ठा रखते थे। उनका मत था कि जगत में ईश्वर प्राप्ति का मार्गदर्शक मेरा गुरू है। जब गुरू ने ज्ञान दिया तब ध्यान, प्राण और मन एक हो गये और प्रेमा भक्ति प्राप्त हो गई। धन्ना का मानना था कि गुरू की कृपा से ही परमानन्द को प्राप्त किया जा सकता है।

''दास धन्ना हरि के गुण गावें,

गुरू प्रसाद परम पद पावै।''

(मध्यकालीन राजस्थान में धार्मिक आन्दोलन– डॉ. पेमाराम, पृ. 283)

बाह्याडम्बरों का विरोध

धन्ना बाह्याडम्बरों के विरोधी थे। उनका मानना था कि ईश्वर के अलावा अन्य को महत्व देकर तीर्थाटन करना व्यर्थ है। धन्ना ने मूर्ति पूजा, गंगास्नान, पूजा कर्म–काण्डों का विरोध किया है तथा अन्य सब चतुराईयों को छोड़कर एक मात्र प्रभु के गुणगान पर बल दिया है–

''धनो कहे चूक कछू नांहि, सब घट मांहि एक है सांई।।''

(संतो एवं भक्तो ंका जीवन–चरित्र–डॉ. विक्रम सिंह राठौड़, पृ. 102 (धन्ना भक्त की परधी)

''हरिगुण गाइये, हरि गुण गाई,

और छोड़ि सबैं चतुराई।।

(मध्यकालीन राजस्थान में धार्मिक आन्दोलन– डॉ. पेमाराम, पृ. 283)

जातिवाद का विरोध

मध्यकालीन समाज मत–मतान्तरों एंव जाति वर्गों से ग्रस्त समाज था। धन्ना का भी जातीय भेदों में विश्वास न था। उनका कथन है कि सब प्राणियों में एक ही ईश्वर का निवास हो तो फिर ऊँच और नीच का भेद कैसा ?

निष्कर्षतः

यह कहा जा सकता है कि मध्यकाल में धर्म की रूढ़िवादिता और सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध उत्तर–भारत में रामानन्द, कबीर, रैदास आदि संतों ने अपने उपदेशों एवें कार्यों द्वारा जो एक सुधारवादी आन्दोलन प्रारंभ किया था, उसी से प्रेरणा लेकर राजस्थान में

भी धन्ना व पीपा ने सामाजिक एवं धार्मिक जागरण का काम किया। पीपा एवं धन्ना भक्त ने धर्म के आडम्बरों तथा वर्णाश्रम व्यवस्था का विरोध किया।

अन्तर्मुखी होकर भक्ति मार्ग पर चलने का उपदेश दिया। धन्ना आदि संतो ने कभी गृहस्थ का परित्याग नहीं किया, बल्कि समाज के सक्रिय सदस्य रहते हुए अपने आदर्शों से समाज को सुधारने की कोशिश की तथा अपने कार्यों एवं विचारों से सभी वर्ग के लोगों को प्रभावित किया।

संदर्भ

1. मध्यकालीन राजस्थान में धार्मिक आन्दोलन (1977)– डॉ. पेमाराम, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर
2. सन्त परम्परा और साहित्य (1999), डॉ. आंकारनाथ चतुर्वेदी, जयपुर पब्लिशिंग हाउस,, जयपुर
3. संतो एवं भक्तों का जीवन–चरित्र (2005)–डॉ. विक्रम हि राठौड़, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधुपर
4. राजस्थ्ज्ञान का सन्त–साहित्य (2002), सम्पादक– डॉ. वसुमती शर्मा, कमल किशोर सांखला, राज. प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
5. उत्तरी भारत की संत परम्परा (सं. 2008), परशुराम चतुर्वेदी, प्रयाग

*** Corresponding Author**

डॉ. रामकुमार सिंह

सहआचार्य, राजकीय कला महाविद्यालय

सीकर,, राजस्थान, भारत

Email-ramkumarsingh358@gmail.com, Mob-9460166640